वर्तमान चौबीसी पूजन

रचयिता - कविवर वृंदावनदास कृत

प्रस्तुति - तत्वचर्चा

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

(कवित्त)

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय।
चंद पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजित सुरराय।।
विमल अनंत धर्म जस-उज्ज्वल, शांति कुन्थु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्धमान पद पुष्प चढाय।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाह्न्म।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ: ठ: ठ: स्थापनम।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणम।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

मुनि मन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा।
भरि कनक-कटोरी धीर, दीनी धार धरा।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्द-कंद सही।
पद जजत हरत भव-फंद, पावत मोक्षमही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

गोशीर कपूर मिलाय, केस्ट रंग भरी।
जिंज चरनन डेट चढ़ाय, भव आतप हरी।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्द-कंद सही।
पद जजत हरत भव-फंद, पावत मोक्षमही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्य: भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

तंदुल सिट सोम समान, सुंदर अनियारे।
मुक्ताफल की उपमान, पुंज धरों प्यारे।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्द-कंद सही।
पद जजत हरत भव-फंद, पावत मोक्षमही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

वर-कंज कदम्ब कुरंड, सुमन सुगंध धरे।
जिन अग्र धरों गुनमंड, कामकलंक हरे।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्द-कंद सही।
पद जजत हरत भव-फंद, पावत मोक्षमही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

मन-मोदन मोदक आदि, सुंदर सद्य बने।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादिहने।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्द-कंद सही।
पद जजत हरत भव-फंद, पावत मोक्षमही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नेवैद्यम निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

तम-खंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे।
सब मोहतिमिर क्षय जाय, ज्ञानकला जागै।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्द-कंद सही।
पद जजत हरत भव-फंद, पावत मोक्षमही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

दश गंध हुताशन मांहि, हे प्रभु! खेवत हूँ।
सिम धूम करम जर जाहीं, तुम पद सेवत हों।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्द-कंद सही।
पद जजत हरत भव-फंद, पावत मोक्षमही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

शुचि पक्क सुरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।
देखत दृग मन को प्यार, पूजत सुख पायो।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्द-कंद सही।
पद जजत हरत भव-फंद, पावत मोक्षमही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जल फल आठों शुचि सार, ताको अरघ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्द-कंद सही।
पद जजत हरत भव-फंद, पावत मोक्षमही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जयमाला

(दोहा)

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हित हेत।
गाऊं गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत।।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(घत्तानन्द)

जय भवतनभंजन, जनमनकंजन,
रंजन दिनमनि स्वच्छ करा।
शिवमग परकाशक, अरिगणनाशक,
चौबीसों जिनराज वरा।।

(पद्धरि)

जय ऋषभदेव ऋषि-गन नमन्त, जय अजित जीत वसु अरि तुरंत।
जय संभव भव-भय करत चूर, जय अभिनन्दन आनन्दपूर।।

जय सुमति सुमति दायक दयाल, जय पद्म पद्म दुति तन रसाल।
जय जय सुपास भव-पास-नाश, जय चंद, चंद-तन-दुति-प्रकाश।।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

जय पुष्पदन्त दुति-दंत-सेत, जय शीतल शीतल-गुन-निकेत।
जय श्रेयनाथ नुत-सहसभुज्ज, जय वासव-पूजित वासुपुज्ज।।

जय विमल विमल-पद-देनहार, जय जय अनंत गुण-गण अपार।
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत, जय शांति शांति-पुष्टि करेत।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

जय कुन्थु कुन्थु-आदिक रखेय, जय अरजिन वसु अरि छय करेय।
जय मल्लि मल्ल हत-मोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्य दल्ल।।

जय नमि नित वासव-नुत सपेम, जय नेमिनाथ वृष-चक्र-नेम।
जय पारसनाथ अनाथ-नाथ, जय वर्धमान शिव-नगर साथ।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(घत्तानन्द)

चौबीस जिनंदा, आनन्द-कंदा,
पाप-निकंदा, सुखकारी।
तिन पद-जुग-चंदा, उदय अमंदा,
वासव-वंदा, हितकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्योअनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घयं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

भुक्ति-मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर ।
तिन पद मन वच धार, जो पूजै सो शिव लहै ।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत